INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

HANDWRITTEN NOTES

[भाग -2]

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 2

भारत + विश्व का इतिहास और कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) (मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams" मुख्य** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/9qwi7z

Online order करें - https://bit.ly/41wfqPD

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

क्र.सं.	अध्याय	पेज नं.
1.	**प्राचीनकालीन भारत** भारतीय धरोहर • सिन्धु सभ्यता एवं वैदिक काल ○ महत्वपूर्ण स्थलों की विशेषताएं ○ सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक जीवन • सिन्धु सभ्यता से लेकर ब्रिटिश काल तक की भारत में विभिन्न कलाएं ○ ललित कला ○ प्रदर्शन कला ○ वास्तु कला ○ भाषा एवं साहित्य ○ प्रमुख साहित्यिक रचनायें • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	1-77
2.	**प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन और धर्म दर्शन** • आजीवक धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, शैव धर्म, वैष्णव धर्म, शंकराचार्य, संत रविदास जी, गुरुनानक जी, चैतन्य महाप्रभु जी, नामदेव जी • भक्ति तथा सूफी आंदोलन	77-103

	• धर्म दर्शन – ○ चार्वाक दर्शन ○ सांख्य दर्शन ○ योग दर्शन ○ न्याय दर्शन ○ वैशेषिक दर्शन ○ मीमांसा दर्शन ○ वेदान्त • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	
3.	प्राचीन भारत के अन्य प्रमुख राजवंश एवं उनका राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक जीवन • मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	104-130
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरब आक्रमण • मोहम्मद बिन कासिम • महमूद गजनबी • मोहम्मद गौरी • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	130-133

2.	दिल्ली सल्तनत • गुलाम वंश से लोदी वंश तक • प्रमुख उपलब्धियाँ • बहमनी एवं विजयनगर साम्राज्य • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	133-146
3.	मुगलकाल • बाबर से औरंगजेब तक • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	147-152
	<u>आधुनिक भारत का इतिहास</u>	
1.	<u>16 वीं शताब्दी से 18 वीं ईस्वी तक की प्रमुख घटनाएँ</u> • यूरोपीय कम्पनियों का आगमन • मुग़ल साम्राज्य का पतन • मराठा साम्राज्य • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	152-169
2.	19 वीं शताब्दी से 1965 वीं ईस्वी तक की प्रमुख घटनाएँ • गवर्नर, गवर्नर जनरल एवं वायसराय एवं उनके कार्य • महत्वपूर्ण घटनाएँ, व्यक्तित्व और मुद्दे • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	169-176

3.	19वीं तथा 20वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधार आंदोलन • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	176-186
4.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • विभिन्न चरण एवं धाराएँ, • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 की क्रांति • बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा। • भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	186-265
5.	स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन • देशी रियासतों का विलय • राज्यों का भाषायी आधार पर पुनर्गठन • मुख्य परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न	265-284
	<u>आधुनिक विश्व का इतिहास</u>	
1.	पुनर्जागरण व धर्म सुधार	285-316

2.	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व औद्योगिक क्रांति	316-351
3.	एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद	351-374
4.	विश्व युद्धों का प्रभाव (प्रथम महान युद्ध)	374-403

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारतीय धरोहर

- **सिन्धु घाटी सभ्यता**

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे - सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी ।
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा**
- **नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है →

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रांति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लॉर्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

- **सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -**
- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।
- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2500 से 1750 ई.पू.
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

• कालीबंगा की खोज अमलानंद घोष द्वारा गंगानगर में की गई, लेकिन यह वर्तमान में हनुमानगढ़ में घग्गर नदी के तट पर है।
• कालीबंगा का उत्खनन 1953 ई. में बी. बी. लाल तथा बी. के. थापड़ ने किया था।
• कालीबंगा से दो फसलों की बुवाई, पक्की सड़कें, युग्म शवाधान, भूकंप, वृषभ की ताम्रमूर्ति, लेखयुक्त बर्तन आदि के साक्ष्य मिले हैं।
• चन्हुदड़ो की खोज N.G मजूमदार ने तथा उत्खनन मैके ने किया था यह एक औद्योगिक शहर था।
• लोथल साबरमती व भोगवा नदी के संगम पर स्थित है, इसकी खोज R.N राव ने की। यहां से अग्निवेदी प्राप्त हुई हैं।
• सिंधुवासी शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों थे। यहाँ से गेहूँ, जौं, चावल, तेल, सरसों, दाल, आदि फसलों के साक्ष्य मिले हैं।
• भारत में आर्यों की जानकारी ऋग्वेद से मिलती है।
• ऋग्वेद में 10 मंडल, 1028 सूक्त, 10580 श्लोक हैं। यह सबसे प्राचीन वेद है।
• वेद-4, उपनिषद्- 108, पुराण-18 की संख्या में पाए जाते हैं।
• सामवेद संगीत का प्राचीनतम स्रोत है, इसके मंत्र सूर्य देवता को समर्पित है।
• पुनर्जन्म की अवधारणा सर्वप्रथम व्रहदारण्यक उपनिषद् से आयी।

मुख्य परीक्षा

1. **भारतीय वैदिक दर्शन की परंपरागत 6 शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीजिए।**
2. **भारतीय परंपरा में ऋण की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।**

❖ सिन्धु घाटी सभ्यता से ब्रिटिश काल तक की कलाएं

नदी की घाटी में कला का उद्भव ईसा पूर्व तीसरी सह शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ था। इस सभ्यता के विभिन्न स्थलों से कला के जो रूप प्राप्त हुए हैं, उनमें प्रतिमाएँ, मुहरें, मिट्टी के बर्तन, आभूषण, पकी हुई मिट्टी की मूर्तियाँ आदि शामिल हैं। उस समय के कलाकारों में निश्चित रूप से उच्च कोटि की कलात्मक सूझ-बूझ और कल्पनाशक्ति विद्यमान थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता के दो प्रमुख स्थल हड़प्पा और मोहनजोदड़ों नामक दो नगर थे, जिनमें से हड़प्पा उत्तर में और मोहनजोदड़ों दक्षिण में सिन्धु नदी के तट पर बसे हुये थे। ये दोनों नगर सुंदर नगर नियोजन की कला के प्राचीनतम उदाहरण थे। इन नगरों में रहने के मकान, बाजार, भंडार घर, कार्यालय, सार्वजनिक स्नानागार आदि सभी अत्यंत व्यवस्थित रूप से यथास्थान बनाए गए थे। इन नगरों में जल निकासी की व्यवस्था भी काफी विकसित थी। हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों इस समय पाकिस्तान में स्थित हैं।

कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण स्थलों से भी हमें कला-वस्तुओं के नमूने मिले हैं, जिनके नाम हैं- लोथल और धौलावीरा (गुजरात), राखीगढ़ी (हरियाणा), रोपड़ (पंजाब) तथा कालीबंगा (राजस्थान)।

पत्थर की मूर्तियाँ

- हड़प्पाई स्थलों पर पाई गईं मूर्तियाँ, भले ही वे पत्थर, कांसे या मिट्टी की बनी हों, संख्या की दृष्टि से बहुत अधिक नहीं हैं पर कला की दृष्टि से उच्च कोटि की हैं। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई
- पत्थर की मूर्तियाँ त्रि-आयामी वस्तुएं बनाने का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। पत्थर की मूर्तियों में दो पुरुष प्रतिमाएं बहुचर्चित हैं, जिनमें से एक पुरुष धड़ है, जो लाल चूना पत्थर का बना है और दूसरी दाढ़ी वाले पुरुष की आवक्ष मूर्ति है, जो सेलखड़ी की बनी है।
- दाढ़ी वाले पुरुष को धार्मिक व्यक्ति माना जाता है। इस आवक्ष एक मूर्ति को शॉल ओढ़े हुए दिखाया गया है। शॉल बाएं कंधे के ऊपर से और दाहिनी भुजा के नीचे से डाली गई है। शॉल त्रिफुलिया नमूनों से सजी हुई है। आँखें कुछ लंबी और आधी बंद दिखाई गई हैं, मानों वह पुरुष ध्यानावस्थित हो।

- कान सीप जैसे दिखाई देते हैं और उनके बीच में छेद हैं। बालों को बीच की मांग के द्वारा दो हिस्सों में बाँटा गया है और सिर के चारों ओर एक सादा बना हुआ फीता बंधा हुआ दिखाया गया है। दाहिनी भुजा पर एक बाजूबंद है और गर्दन के चारों ओर छोटे-छोटे छेद बने हैं जिससे लगता है कि वह हार पहने हुए है ।

कांसे की ढलाई

- हड़प्पा के लोग कांसे की ढलाई बड़े पैमाने पर करते थे और इस काम में प्रवीण थे। इनकी कांस्य मूर्तियाँ कांसे को ढालकर बनाई जाती थी। इस तकनीक के अंतर्गत सर्वप्रथम मोम की एक प्रतिमा या मूर्ति बनाई जाती थी।
- इसे चिकनी मिट्टी से पूरी तरह लीपकर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। जब वह पूरी तरह सूख जाती थी तो उसे गर्म किया जाता था और उसके मिट्टी के आवरण में एक छोटा सा छेद बनाकर उस छेद के रास्ते सारा पिघला हुआ मोम बाहर निकाल दिया जाता था ।
- इसके बाद चिकनी मिट्टी के खाली सांचे में उसी छेद के रास्ते पिघली हुई धातु भर दी जाती थी। जब वह धातु ठंडी होकर ठोस हो जाती थी तो चिकनी मिट्टी के आवरण को हटा दिया जाता था।
- कांस्य में मनुष्यों और जानवरों दोनों की ही मूर्तियाँ बनाई गई हैं। **मानव मूर्तियों का सर्वोत्तम नमूना है एक लड़की की मूर्ति, जिसे नर्तकी के रूप में जाना जाता है।** कांसे की बनी हुई जानवरों की मूर्तियों में भैंस और बकरी की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भैंस का सिर और कमर ऊँची उठी हुई है तथा सींग फैले हुए हैं। **सिन्धु सभ्यता के सभी केंद्रों में कांसे की ढलाई का काम बहुतायत में होता था।**

मृणमूर्तियाँ (टेराकोटा)

- सिन्धु घाटी के लोग मिट्टी की मूर्तियाँ भी बनाते थे लेकिन वे पत्थर और कांसे की मूर्तियों जितनी बढ़िया नहीं होती थीं। सिन्धु घाटी की मूर्तियों में **मातृदेवी की प्रतिमाएं अधिक** उल्लेखलीय हैं।
- कालीबंगा और लोथल में पाई गई नारी मूर्तियाँ हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में पाई गई मातृदेवी की मूर्तियों से बहुत ही अलग तरह की हैं। मिट्टी की मूर्तियों में कुछ दाढ़ी-मूँछ वाले ऐसे पुरुषों की भी छोटी-छोटी मूर्तियाँ पाई गई हैं, जिनके बाल गुंथे हुए (कुंडलित) हैं, जो एकदम सीधे खड़े हुए हैं, टांगें थोड़ी चौड़ी हैं और भुजाएं शरीर के समानांतर नीचे की ओर लटकी हुई हैं।
- ठीक ऐसी ही मुद्रा में मूर्तियाँ बार-बार पाई गईं हैं, जिससे यह प्रतीत होता है कि ये किसी देवता की मूर्तियाँ हैं। एक सींग वाले देवता का मिट्टी का बना मुखौटा भी मिला है। इनके अलावा, मिट्टी की बनी पहिएदार गाड़ियाँ, छकड़े, सीटियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, खेलने के पासे, गिट्टियाँ, चक्रिका (डिस्क) भी मिली हैं।

मुद्राएँ (मुहरें)

- पुरातत्वविदों को हज़ारों की संख्या में मुहरें (मुद्राएं) मिली हैं, जो आमतौर पर सेलखड़ी और कभी-कभी गोमेद, चकमक पत्थर, तांबा, कांस्य और मिट्टी से बनाई गई थीं। उन पर एक सींग वाले साँड़, गैंडा, बाघ, हाथी, जंगली भैंसा, बकरा, भैंसा आदि पशुओं की सुंदर आकृतियाँ बनी हुई थीं।
- इन आकृतियों में प्रदर्शित विभिन्न स्वाभाविक मनोभावों की अभिव्यक्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन मुद्राओं को तैयार करने का **उद्देश्य मुख्यतः वाणिज्यिक था।** ऐसा प्रतीत होता है कि ये मुद्राएं बाजूबंद के तौर पर भी कुछ लोगों द्वारा पहनी जाती थीं जिनसे उन व्यक्तियों की पहचान की जा सकती थी, । जैसे कि आजकल लोग पहचान पत्र धारण करते हैं।
- हड़प्पा की मानक मुद्रा 2x2 इंच की वर्गाकार पटिया होती थी, जो आमतौर पर सेलखड़ी से बनाई जाती थी। प्रत्येक मुद्रा में एक चित्रात्मक लिपि खुदी होती थी जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है। कुछ मुद्राएँ हाथीदांत की भी पाई गई हैं।
- मुद्राओं के डिज़ाइन अनेक प्रकार के होते थे पर अधिकांश में कोई जानवर, जैसे कि कूबड़दार या बिना कूबड़ वाला साँड़, हाथी, बाघ, बकरे और दैत्याकार जानवर बने होते हैं।
- उनमें कहीं-कहीं पेड़ों और मानवों की आकृतियाँ भी बनी पाई गई हैं। इनमें **सबसे अधिक उल्लेखनीय एक ऐसी मुद्रा है जिसके केंद्र में एक मानव आकृति और उसके चारों ओर कई जानवर बने हैं।** इस मुद्रा को कुछ विद्वानों द्वारा **पशुपति मुद्रा कहा जाता है** (आकार । / 2 से 2 इंच तक के वर्ग या आयत के रूप में) जबकि कुछ अन्य इसे किसी

देवी की आकृति मानते हैं। इस मुद्रा में एक मानव आकृति पालथी मारकर बैठी हुई दिखाई गई है।

- इस मानव आकृति के दाहिनी ओर एक हाथी और एक बाघ (शेर) है जबकि बाँयी ओर एक गैंडा और भैंसा दिखाए गए हैं। इन पशुओं के अलावा, स्टूल के नीचे दो बारहसिंगे हैं। इस तरह की मुद्राएं 2500-1900 ई. पू. की हैं और ये सिन्धु घाटी के प्राचीन नगर मोहनजोदड़ो जैसे अनेक पुरास्थलों पर बड़ी संख्या में पाई गई हैं। इनकी सतहों पर मानव और पशु आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं।
- इन मुद्राओं के अलावा, तांबे की वर्गाकार या आयताकार पट्टियाँ (टैबलेट) पाई गई हैं, जिनमें एक ओर मानव आकृति और दूसरी ओर कोई अभिलेख अथवा दोनों ओर ही कोई अभिलेख है। इन पट्टियों पर आकृतियाँ और अभिलेख किसी नोकदार औजार (छेनी) से सावधानीपूर्वक काटकर अंकित किए गए हैं। मृद्भाण्ड
- इन पुरास्थलों से बड़ी संख्या में प्राप्त मृद्भाण्डों (मिट्टी के बर्तनों) की शक्ल सूरत तथा उन्हें बनाने की शैलियों से हमें तत्कालीन डिज़ाइनों के भिन्न-भिन्न रूपों तथा विषयों के विकास का पता चलता है।
- ***सिन्धु घाटी में पाए गए मिट्टी के बर्तन*** अधिकतर कुम्हार की चाक पर बनाए गए बर्तन हैं, हाथ से बनाए गए बर्तन नहीं।
- इनमें रंग किए हुए बर्तन कम और सादे बर्तन अधिक हैं। ये सादे बर्तन आमतौर पर लाल चिकनी मिट्टी के बने हैं। इनमें से कुछ पर सुंदर लाल या स्लेटी लेप लगी है। कुछ घुंडीदार पात्र हैं, जो घुंडियों की पंक्तियों से सजे हैं।
- काले रंगीन बर्तनों पर लाल लेप की एक सुंदर परत है, जिस पर चमकीले काले रंग से ज्यामितीय आकृतियाँ और पशुओं के डिज़ाइन बने हैं।
- बहुरंगी मृद्भाण्ड बहुत कम पाए गए हैं। इनमें मुख्यतः छोटे-छोटे कलश शामिल हैं जिन पर लाल, काले, हरे और कभी-कभार सफ़ेद तथा पीले रंगों में ज्यामितीय आकृतियाँ बनी हुई हैं। उत्कीर्णित बर्तन भी बहुत कम पाए गए हैं, और जो पाए गए हैं उनमें उत्कीर्णन की सजावट पेंदे पर और बलि-स्तंभ की तश्तरियों तक ही सीमित थी।

<u>आभूषण-</u>

- हड़प्पा के पुरुष और स्त्रियां अपने आपको तरह-तरह के आभूषणों से सजाते थे। ये ***गहने बहुमूल्य धातुओं और रत्नों से लेकर हड्डी और पकी हुई मिट्टी तक के बने होते थे।***
- गले के हार, फीते, बाजूबंद और अंगूठियाँ आमतौर पर पुरुषों और स्त्रियों दोनों के द्वारा समान रूप से पहनी जाती थीं, पर करधनियाँ, बुंदे (कर्णफूल) और पैरों के कड़े या पैजनियाँ स्त्रियाँ ही पहना करती थीं। मोहनजोदड़ो और लोथल से ढेरों गहने मिले हैं, जिनमें सोने और मूल्यवान नगो के हार, तांबे के कड़े और मनके, सोने के कुंडल, बुंदे/झुमके और शीर्ष 3 -आभूषण, लटकनें तथा बटने और सेलखड़ी के मनके तथा बहुमूल्य रत्न शामिल हैं।
- सभी आभूषणों को सुंदर ढंग से बनाया गया है। यह ध्यान देने वाली बात है कि ***हरियाणा के फरमाना पुरास्थल पर एक कब्रिस्तान (शवाधान) पाया गया है, जहाँ शवों को गहनों के साथ दफनाया गया है।***
- चन्हुदड़ो और लोथल में पाई गई कार्यशालाओं से पता चलता है कि मनके बनाने का उद्योग काफी अधिक विकसित था। मनके कार्नीलियन, जमुनिया, सूर्यकांत, स्फटिक, कांचमणि, सेलखड़ी, फीरोज़ा, लाजवर्द मणि आदि के बने होते थे।
- इसके अलावा तांबा, कांसा और सोने जैसी धातुएँ और शंख-सीपियां और पकी मिट्टी भी मनके बनाने के काम में आती थीं। मनके तरह-तरह के रूप और आकार के होते थे—कोई तश्तरीनुमा बेलनाकार, गोल या ढोलकाकार होता था तो कोई कई खंडों में विभाजित कुछ मनके दो या अधिक पत्थरों के जोड़ से बने होते थे, कुछ पत्थर पर सोने का आवरण चढ़ा होता था, कुछ को काटकर या रंगकर सुंदर बनाया जाता था तो कुछ में तरह-तरह के नमूने खुदे होते थे।

हड़प्पा के लोग पशुओं, विशेष रूप से बंदरों और गिलहरियों के नमूने बनाते थे, जो एकदम असली जैसे दिखाई देते थे। इनका उपयोग पिन की नोक और मनकों के रूप में किया जाता था।

- ***सिन्धु घाटी के घरों में बड़ी संख्या में तकुए और तकुआ चक्रिया भी मिली हैं,*** जिससे पता चलता है कि उन दिनों कपास और ऊन की कताई बहुत प्रचलित थी। गरीब और अमीर दोनों तरह के लोगों में कताई का आम रिवाज था।

- गुलबर्गा तथा बीदर के राजमहल, गेसुद राज की कब्र, चार विशाल दरवाजों वाला फिरोज शाह का महल, मुहम्मद आदिल शाह का मकबरा, जामा मस्जिद, बीजापुर की गोल गुम्बद तथा बीजापुर सुल्तानों के मकबरे स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने हैं ।
- **गोल गुम्बद को विश्व के गुम्बदों में श्रेष्ठ माना जाता है।**
- गोलकुंडा तथा दौलताबाद के किले भी इसी श्रेणी में आते हैं ।
- इस **स्थापत्य कला में हिन्दू, तुर्की, मिस्र, ईरानी तथा अरेबिक कलाओं का सम्मिश्रण है।**

साहित्य

- **प्रसिद्ध सूफी संत गेसूदराज दक्षिण के प्रथम विद्वान थे उर्दू पुस्तक मिरात-उल-आशिकी की फ़ारसी भाषा में रचना की ।**
- **इब्राहिम आदिलशाह द्वितीय प्रथम शासक था जिसने उर्दू को बीजापुर की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया ।**

उसके दो ग्रंथ अत्यधिक प्रसिद्ध हैं-

- उरोजात-उन-इंशा
- दीवाने अश्र

किले और मस्जिदे :-

- **विजयनगर राज्य के दो मजबूत किले मुदगल और रायचूर बहमनी सीमा के निकट स्थित थे । इन किलों पर बहमनी सल्तनत और विजयनगर राज्य दोनों दाँत लगाये हुए थे।**
- इन दोनों राज्यों में धर्म का अन्तर भी था। बहमनी राज्य इस्लामी और विजयनगर राज्य हिन्दू था । बहमनी सल्तनत की स्थापना के बाद ही उन दोनों राज्यों में लड़ाईयाँ शुरू हो गई और वे तब तक चलती रहीं जब तक बहमनी सल्तनत कायम रही।

विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

- **विजयनगर साम्राज**

स्थापना

विजयनगर मध्य युग में दक्षिण भारत का एक हिन्दू राज्य था।

विजयनगर साम्राज्य की राजधानी तुंगभद्रा नदी के किनारे हम्पी थी।

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की थी।

- माधवारण्य इनके गुरु थे।
- हरिहर और बुक्का वारंगल के काकतीय राजा रुद्रप्रताप देव के सामंत थे ।

विजयनगर के राजवंश

विजयनगर साम्राज्य पर जिन राजवंशों ने शासन किया, वे निम्नलिखित हैं-

1. संगम वंश - 1336 - 1485 ई.
2. सालुव वंश - 1485 - 1505 ई.
3. तुलुव वंश - 1505 - 1570 ई.
4. अरविडु वंश - 1570 - 1650 ई.

मध्यकाल में कला एवं वास्तु

(1) बाबर की स्थापत्य कला -

- बाबर भारतीय स्थापत्य कला को अच्छा नहीं समझता था, इसीलिए उसे आगरा व दिल्ली में भारतीयों द्वारा बनवाई गई इमारतें पसन्द नहीं आई।
- बाबर ने भवनों के निर्माण के लिए कुस्तुनतुनिया से कारीगरों को बुलवाया।बाबर ने आगरा, अलीगढ़, सीकरी, धौलपुर, बयाना, ग्वालियर आदि स्थानों पर कुएँ, तालाब, फब्बारे आदि बनवाए। बाबर द्वारा बनवाए गए निम्नलिखित दो भवन ही आज दिखाई देते हैं ।

(i) पानीपत की काबुली मस्जिद, और (ii) सम्भल की जामा मस्जिद।

ये दोनों मस्जिदें 1526 ई. में बनवाई गई थीं। इन मस्जिदों में कोई विशेष नमूना नहीं है।

(2) हुमायूँ की स्थापत्य कला -

- हुमायूँ का अधिकांश जीवन युद्धों व भाग-दौड़ में बीता, अतः उसे इमारतें बनवाने का समय नहीं मिला । फिर भी **हुमायूँ ने 'दीन-ए-पनाह' नामक महल दिल्ली में बनवाया।**
- शेरशाह सूरी ने शायद इसे नष्ट कर दिया। हुमायूँ ने फतेहाबाद व आगरा में भी मस्जिदें बनवाई। **स्थापत्य कला की एक महत्त्वपूर्ण इमारत हुमायूँ का मकबरा है।** यद्यपि इसका निर्माण अकबर के प्रारम्भिक शासनकाल में हुआ, परन्तु यह हुमायूँ के काल की इमारत है। यह मकबरा ईरानी और भारतीय शैलियों के मिश्रण का नमूना है। इसमें फारसी शैली का प्रभाव भी है। '

(3) शेरशाह की स्थापत्य कला -

- **शेरशाह-वास्तुकला का बहुत प्रेमी था।** वह प्रत्येक शहर में एक किला बनवाना चाहता था और मिट्टी

की बनी हुई सरायों को पक्के मकानों में बदलकर उन्हें राज्य की सुरक्षा करने की चौकियाँ बनाना चाहता था। दिल्ली का पुराना किला शेरशाह सूरी द्वारा बनवाया हुआ है।

- **शेरशाह सूरी द्वारा बनवाई गई प्रसिद्ध इमारतों में शेरशाह का मकबरा भी है।**

(4) अकबर की स्थापत्य कला -

- मुगलों की स्थापत्य कला सही अर्थ में अकबर के शासनकाल से प्रारम्भ होती है। **अकबर ने अपनी स्थापत्य कला में ईरानी व भारतीय कला का समन्वय स्थापित किया। अकबर के काल की सभी इमारतें लाल पत्थर की हैं और सजावट के लिए संगमरमर का प्रयोग किया गया है।**
- अकबर द्वारा बनवाए गए भवन या इमारतें निम्न प्रकार हैं

(i) आगरे का लाल किला
(ii) जहाँगीरी महल
(iii) अकबरी महल
(iv) लाहौर का किला,
(v) इलाहाबाद का किला,
(vi) दीवान-ए-आम
(vii) जोधाबाई का किला,
(viii) बीरबल का महल
(ix) पंचमहल, यह भी सीकरी में है और हिन्दू-मुस्लिम स्थापत्य का मिश्रण
(x) **जामा मस्जिद,** इसका निर्माण 1571 ई. में हुआ। **यह चित्रकारी की दृष्टि से फतेहपुरी सीकरी की सर्वश्रेष्ठ इमारत है।**
(xi) बुलन्द दरवाजा, इसे अकबर ने गुजरात की विजय के बाद बनवाया था। यह फतेहपुर सीकरी में स्थित है और मुग़ल कालीन दरवाजों में श्रेष्ठ है।
(xii) **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा,** यह 1571 ई. में बना था। इसकी चित्रकारी देखने योग्य है।
(xiii) सिकन्दरा, इसका निर्माण कार्य अकबर ने प्रारम्भ करवाया था, परन्तु यह 1623 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में बनकर तैयार हुआ।

अकबर द्वारा बनवाए गए भवनों की इतिहासकारों ने बड़ी प्रशंसा की है । स्मिथ ने फतेहपुर सीकरी की इमारतों को अभूतपूर्व व पत्थर पर अंकित कहानी कहा है।

(5) <u>जहाँगीर की स्थापत्य कला</u> -

जहाँगीर को चित्रकला से ही अधिक लगाव था, वास्तुकला से नहीं । उसके समय की दो इमारतें प्रमुख हैं ।

(i) <u>एत्मादुद्दौला का मकबरा</u> - यह मकबरा नूरजहाँ ने अपने पिता की याद में 1626 ई. में बनवाया था। यह आगरा में स्थित है और सफेद संगमरमर का बना है।

(ii) <u>जहाँगीर का मकबरा</u> - इसका निर्माण भी नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह लाहौर के निकट रावी नदी के किनारे शाहदरा में स्थित है। समाधि पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

(6) <u>शाहजहाँ की स्थापत्य कला</u> – भवन निर्माण की दृष्टि से शाहजहाँ का काल मुग़ल काल का स्वर्ण युग था। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में मौलिकता, सुन्दरता और कोमलता है। इन भवनों में नक्काशी व चित्रकारी विशेष है। शाहजहाँ के काल में निम्नलिखित इमारतों का निर्माण हुआ ।

(i) <u>आगरा के किले में निर्मित इमारतें</u> - शाहजहाँ ने अकबर द्वारा लाल किले में लाल पत्थर से बनवाई गई इमारतों को तुड़वाकर उन्हें संगमरमर से बनवाया। ये इमारतें हैं—दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मच्छी भवन, शीश महल तथा खास महल, झरोखा दर्शन और मुसम्मन बुर्ज, नगीना और मोती मस्जिद।

(ii) <u>ताजमहल</u> -

- **शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई सर्वश्रेष्ठ इमारत आगरा का ताजमहल है,** जिसे उसने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया था। इसकी गणना **विश्व के सात आश्चर्यों (अजूबों) में की जाती है। यह 22 वर्षों में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत फारसी ढंग से बनी हुई है, फिर भी बहुत-सी शिल्पकला हिन्दू ढंग की है।**

(iii) <u>दिल्ली का लालकिला</u> –

- शाहजहाँ ने 1632 ई. में दिल्ली में **यमुना नदी के** किनारे एक विशाल किले का निर्माण करवाया। इसमें दो दरवाजे हैं। **इसमें दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और रंगमहल बहुत सुन्दर हैं।**
- दीवान-ए-खास की दीवार पर लिखा है, "अगर फिरदौस बरसरा जमीनस्त

श्री **माध्वाचार्य** जिनको क्रमशः इन तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना जाता है, इनके अलावा भी ज्ञानयोग की अन्य शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ अपने प्रवर्तकों के नाम से जानी जाती हैं जिनमें भास्कर, वल्लभ, चैतन्य, निम्बार्क, वाचस्पति मिश्र, सुरेश्वर और विज्ञान भिक्षु। आधुनिक काल में जो प्रमुख वेदान्ती हुये हैं उनमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, अरविंद घोष, स्वामी शिवानंद स्वामी करपात्री और रमण महर्षि उल्लेखनीय हैं। ये आधुनिक विचारक अद्वैत वेदान्त शाखा का प्रतिनिधित्व करते हैं। दूसरे वेदान्तों के प्रवर्तकों ने भी अपने विचारों को भारत में भलिभांति प्रचारित किया है, परन्तु भारत के बाहर उन्हें बहुत कम जाना जाता है। संत में भी ज्ञानेश्वर महाराज, तुकाराम महाराज आदि संत पुरुषों ने वेदान्त के ऊपर बहुत ग्रंथ लिखे हैं आज भी लोग संतों के उपदेशों के अनुकरण करते हैं।

अद्वैतवाद – इसमें ब्रह्म का विवेचन निर्गुण रूप में किया गया है। इसके प्रमुख दार्शनिक शंकराचार्य हैं।

द्वैतवाद – इसमें ब्रह्म को सगुण ईश्वर के रूप में विवृत किया गया है। रामानुज तथा माध्वाचार्य इस शाखा के प्रमुख दार्शनिक हैं। जिनके मत क्रमशः विशिष्टाद्वैत एवं द्वैत कहे जाते हैं।

वेदान्त का साहित्य

उपनिषद

विद्वानों ने उपनिषद शब्द की व्युत्पत्ति उप+ नि + षद के रूप में मानी है। इसका अर्थ है कि जो ज्ञान व्यवधान रहित होकर निकट आये, जो ज्ञान विशिष्ट तथा संपूर्ण हो तथा जो ज्ञान सच्चा हो वह निश्चित ही उपनिषद कहलाता है।

भगवद् गीता

भगवद् गीता या गीता का भारतीय विचारधारा के इतिहास में लोकप्रियता की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज भी यह हिन्दुओं का सबसे पवित्र एवं सम्मानित ग्रंथ है। गीता मूलतः महाभारत के भीष्मपर्व का अंश है। इसमें महाभारत युद्ध के अवसर पर कर्त्तव्यविमुख एवं भयभीत हुए अर्जुन को भगवान कृष्ण द्वारा किये गये उपदेशों का संग्रह है। इसकी शिक्षा में एक उदार समन्वय की भावना है, जो हिन्दू विचारधारा की सर्वप्रमुख विशेषता रही है। इसमें प्रत्येक धर्म को मानने वाले के लिये रोचक एवं महत्त्वपूर्ण सामग्री मिल जाती है। **डॉ.राधाकृष्णन** के शब्दों में यह किसी सम्प्रदाय विशेष की पुस्तक नहीं है, अपितु संपूर्ण मानव समाज की सांस्कृतिक निधि है, जो हिन्दू धर्म को उसकी पूर्णता में उपस्थित करती है

"सारांश"

- बौद्ध धर्म के सर्वाधिक उपदेश श्रावस्ती में दिए गये।
- नालंदा विश्वविद्यालय गुप्त शासक कुमारगुप्त ने बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए स्थापित किया।
- जैन धर्म में कुल 24 तीर्थकर हुए,जो कि वर्धमान महावीर थे (24वें) संस्थापक एवं प्रथम ऋषभदेव थे।

मुख्य परीक्षा

1. 'अर्जुन की तपस्या' प्रतिमा का संक्षिप्त विवरण दीजिए।
2. बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म के अलावा भारत के किन्हीं दो अनीश्वरवादी धार्मिक संप्रदाय के नाम लिखिए।

अध्याय – 3

प्राचीन भारत के अन्य प्रमुख राजवंश एवं उनका राजनीतिक, धार्मिक, एवं सांस्कृतिक जीवन

- **प्रमुख राजवंशों के महत्त्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ**
- **मौर्य वंश**

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया ।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

- बैक्ट्रिया के शासक सेल्यूकस को चन्द्रगुप्त ने पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया तथा **दहेज में हेरात, कंधार, मकरान तथा काबुल प्राप्त किया।**
- सेल्यूकस ने अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा था। यूनानी लेखकों ने **पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित** किया है।
- **'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख** में प्राप्त हुआ है।
- जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने **श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति** (संलेखना पद्धति) **द्वारा प्राण त्याग दिये।**
- **चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।**
- आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।
- **मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।**
- इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।
- चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था ।

मेगस्थनीज

- मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था ।
- **इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।**
- मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था ।
- यूनानियों ने चन्द्रगुप्त को **सेंड्रोकोट्स** नाम दिया।
- चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था ।

बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।
- बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।

- बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।
- **अमित्रघात** अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।

अशोक महान

- अशोक अपने **पिता बिन्दुसार** के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था ।
- प्राचीन भारतीय इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध सम्राट अशोक था ।
- सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं ।
- **अभिलेखों में अशोक का नाम देवानाम प्रियदर्शी लिखा मिलता है।**
- सर्वप्रथम **मास्की लेख** में अशोक का नाम पढ़ा गया।
- अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।
- अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।

कलिंग युद्ध

- मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।
- अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।
- यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।
- कलिंग विजय के नरसंहार से सम्राट अशोक ने कभी युद्ध न करने का फैसला किया।
- अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।
- **अभिलेखों की भाषा**
  - **प्राकृत (अधिकांश इसी भाषा में।)**
  - **यूनानी**
  - **अरामाइक**
- **अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम 1837 में जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था।**
- अशोक के **वृहद शिलालेख** (पहाड़ियों पर) **1 से 14 तक थे।**
- अशोक के प्रथम वृहद शिलालेख में पशु हत्या को निषेध बताया है।
- इसका 12वाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- इसके शासन काल में **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन पाटलिपुत्र में हुआ।**
- अशोक महान द्वारा प्रचारित की गई **नीतिगत शिक्षा को अशोक का धम्म** कहा गया।
- अशोक द्वारा धर्म प्रचार के लिए भेजे गये प्रचारक-
  सोन एवं उत्तरा- स्वर्णभूमि में
  महेन्द्र एवं संघमित्रा- श्रीलंका
  महारक्षित - यवन प्रदेश
  रक्षित - वनवासी (उ० कनाडा)
- अशोक के बाद उसके उत्तराधिकारी निर्बल तथा कमजोर हुए। उन्होंने साम्राज्य का बंटवारा कर लिया। 50 वर्षों के भीतर ही मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया।

अशोक के वृहद् शिलालेखों में उल्लेखित 14 आदर्श

- प्रथम शिलालेख - खर्चीले समारोह पर प्रतिबंध, पशु-बलि निषेध, सभी मनुष्य मेरी संतान.....।
- द्वितीय शिलालेख - दक्षिण के पड़ोसी राज्यों (चोल, पांड्य, सत्तियपुत्त एवं केरलपुत्त) तथा ताम्रपर्णी का उल्लेख, कल्याणकारी कार्यों का वर्णन
- तृतीय शिलालेख युक्त, रज्जुक, प्रादेशिक महामात्य आदि की नियुक्ति का उल्लेख।
- चतुर्थ शिलालेख - 'धम्म' का उल्लेख।
- पंचम शिलालेख - धम्म महामात्रों की नियुक्ति ।
- षष्टम शिलालेख - आम जनता किसी भी वक्त राजा से मिल सकती है।
- सप्तम शिलालेख - सभी संप्रदायों में सहिष्णुता की भावना।
- अष्टम शिलालेख धम्म यात्रा आरंभ करने का उल्लेख।
- नवम शिलालेख - धम्म समारोह ।
- दशम शिलालेख– धम्म नीति सर्वश्रेष्ठ।
- ग्यारहवाँ शिलालेख धम्म नीति की व्याख्या ।
- बारहवाँ शिलालेख धार्मिक सहिष्णुता का उल्लेख।
- **तेरहवाँ शिलालेख**

➢ **कलिंग युद्ध का वर्णन।**
➢ पाँच विदेशी राजा एंटियोकस-II, टाल्मी-II, एंटिगोनस, मागस तथा अलेक्जेंडर का उल्लेख है।
➢ आटविक जातियों को चेतावनी ।

गुप्त वंश

- गुप्त राजवंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था।
- मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल में हर्ष तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही।
- कुषाण एवं सातवाहनों ने राजनीतिक एकता लाने का प्रयास किया। मौर्योत्तर काल के उपरान्त तीसरी शताब्दी ईस्वी में तीन राजवंशो का उदय हुआ जिसमें मध्य भारत में नाग शक्ति, दक्षिण में वाकाटक तथा पूर्वी में गुप्त वंश प्रमुख हैं। मौर्य वंश के पतन के पश्चात नष्ट हुई **राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है।**
- गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था।

गुप्त वंश की उत्पत्ति

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त ने पूना अभिलेख में अपने वंश को स्पष्टतः धारण गोत्रीय बताया हैं । अग्रवालों के 18 गोत्र में से एक गोत्र धारण हैं ।
- गुप्त वैश्यों की उपाधि हैं, आज भी धार्मिक कर्म व संकल्प करते हुए वैश्य पुरोहित नाम व गोत्र के साथ गुप्त उपनाम का उल्लेख करते हैं ।
- गुप्त शासकों के नाम श्री, चन्द्र, समुद्र, स्कन्द आदि थे । जबकि गुप्त उनका उपनाम था, जो की उनके वर्ण व जाति को उद्घोषित करता हैं ।
- गुप्त उपनाम केवल और केवल वैश्य समुदाय के व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होता हैं । **इतिहास में व पुराणों में गुप्त सम्राटों को वैश्य बताया गया है।**
- गुप्त वंश के शासक अग्रवाल थे । प्रख्यात इतिहासकार राहुल संस्कृतायन ने भी गुप्त वंश को अग्रवाल वैश्य बताया हैं ।
- अग्रवालों की कुलदेवी माता लक्ष्मी है । गुप्त सम्राटों की कुलदेवी भी माता लक्ष्मी है । अग्रवाल मुख्यतः वैष्णव होते है और शुद्ध शाकाहारी भी गुप्त वंश के शासक भी वैष्णव और शाकाहारी थे । **गुप्त वंश के समय में भारत सोने की चिड़िया कहलाया था ।** एक विशुद्ध वैश्य शासक ही व्यापार को बढ़ावा दे सकता है।

गुप्त वंश के शासक

घटोत्कच (280-320 ई.)

- गुप्त वंश के शासक श्रीगुप्त के पश्चात् उसका पुत्र घटोत्कच राजगद्दी पर बैठा ।
- इसने 280 ई. से 320 ई. तक शासन किया। इसने महाराजा की उपाधि धारण की थी।
- उत्पन्न होते समय उसके सिर पर केश (उत्कच) न होने के कारण उसका नाम घटोत्कच रखा गया।
- वह अत्यन्त मायावी था जिस कारण वो जन्म लेते ही बड़ा हो गया था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335 ई.)

- अपने पिता घटोत्कच के बाद सन् 319 / 320 ई. में चन्द्रगुप्त प्रथम राजा बना। चन्द्रगुप्त, गुप्त वंशावली में पहला स्वतंत्र शासक था।
- इसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी । बाद में लिच्छवि राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया अपने साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- यहीं से उसका साम्राज्य विस्तार हुआ। उसने सफलता पूर्वक लगभग पंद्रह वर्ष (320 ई. से 335 ई. तक) तक शासन किया।
- चन्द्रगुप्त ने एक गुप्त संवत (319-320 ई.) चलाया कदाचित इसी तिथि को चन्द्रगुप्त प्रथम का राज्याभिषेक हुआ था ।

समुद्रगुप्त (335 – 375 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद 335 ई. में उसका तथा कुमारदेवी का पुत्र समुद्रगुप्त राजगद्दी पर बैठा।
- सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास में महानतम शासकों के रूप में वह नामित किया जाता है। इन्हें **परक्रमांक** कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है।** इस साम्राज्य की **राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- समुद्रगुप्त ने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की।
- समुद्रगुप्त एक असाधारण सैनिक योग्यता वाला महान विजित सम्राट था। **विन्सेट स्मिथ ने इन्हें नेपोलियन की उपाधि दी।**
- उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अभियान दक्षिण की तरफ **(दक्षिणापथ)** था । इसमें उसकी बारह विजयों का उल्लेख मिलता है।

- समुद्रगुप्त एक अच्छा राजा होने के अतिरिक्त एक अच्छा कवि तथा संगीतज्ञ भी था। उसे कला मर्मज्ञ भी माना जाता है।
- उसका देहान्त 375 ई. में हुआ जिसके बाद उसका पुत्र चन्द्रगुप्त द्वितीय राजा बना। यह उच्चकोटि का विद्वान तथा विद्या का उदार संरक्षक था।
- उसे कविराज भी कहा गया है। वह महान संगीतज्ञ था जिसे वीणा वादन का शौक था।
- इसने प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबन्धु को अपना मन्त्री नियुक्त किया था।
- हरिषेण, समुद्रगुप्त का मंत्री एवं दरबारी कवि था। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति से समुद्रगुप्त के राज्यारोहण, विजय, साम्राज्य विस्तार के संबंध में सटीक जानकारी प्राप्त होती है।
- **काव्यालंकार सूत्र में समुद्रगुप्त का नाम 'चन्द्रप्रकाश' मिलता है।**
- उसने उदार, दानशील, असहायी तथा अनाथों को अपना आश्रय दिया।
- वैदिक धर्म के अनुसार इन्हें धर्म व प्राचीर बन्ध यानी धर्म की प्राचीर कहा गया है।
- **समुद्रगुप्त का साम्राज्य**- समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्य पर्वत तक तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी से पश्चिम में पूर्वी मालवा तक विस्तृत था। कश्मीर, पश्चिमी पंजाब,पश्चिमी राजस्थान, सिन्ध तथा गुजरात को छोड़कर समस्त उत्तर भारत इसमें सम्मिलित थे। दक्षिणापथ के शासक तथा पश्चिमोत्तर भारत की विदेशी शक्तियाँ उसकी अधीनता स्वीकार करती थीं ।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (375-415)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय 375 ई. में सिंहासन पर आसीन हुआ। वह समुद्रगुप्त की प्रधान महिषी दत्तदेवी से हुआ था।
- वह विक्रमादित्य के नाम से इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। उसने 375 से 415 ई. तक (40 वर्ष) शासन किया।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों पर अपनी विजय हासिल की जिसके बाद गुप्त साम्राज्य एक शक्तिशाली राज्य बन गया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय में क्षेत्रीय तथा सांस्कृतिक विस्तार हुआ।
- हालांकि चन्द्रगुप्त द्वितीय का अन्य नाम देव, देवगुप्त, देवराज, देवश्री आदि हैं। उसने विक्रमांक, विक्रमादित्य, परम भागवत आदि उपाधियाँ धारण की।
- उसने नागवंश, वाकाटक और कदम्ब राजवंश के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किये। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने नाग राजकुमारी कुबेर नागा के साथ विवाह किया जिससे एक कन्या प्रभावती गुप्त पैदा हुई।
- वाकाटकों का सहयोग पाने के लिए चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन द्वितीय के साथ कर दिया।
- उसने प्रभावती गुप्त के सहयोग से गुजरात और काठियावाड़ की विजय प्राप्त की।
- वाकाटकों और गुप्तों की सम्मिलित शक्ति से शकों का उन्मूलन किया।
- **कदम्ब राजवंश का शासन कुंतल (कर्नाटक) में था।** चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त प्रथम का विवाह कदम्ब वंश में हुआ।
- शक उस समय गुजरात तथा मालवा के प्रदेशों पर राज कर रहे थे। शकों पर विजय के बाद उसका साम्राज्य न केवल मजबूत बना बल्कि उसका पश्चिमी समुद्री पत्तनों पर अधिपत्य भी स्थापित हुआ।
- इस विजय के पश्चात उज्जैन गुप्त साम्राज्य की राजधानी बना। विद्वानों को इसमें संदेह है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय तथा विक्रमादित्य एक ही व्यक्ति थे।
- उसके शासनकाल में चीनी बौद्ध यात्री फाह्यान ने 399 ईस्वी से 414 ईस्वी तक भारत की यात्रा की। उसने भारत का वर्णन एक सुखी और समृद्ध देश के रूप में किया। चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल को स्वर्ण युग भी कहा गया है।
- चन्द्रगुप्त एक महान प्रतापी सम्राट था। उसने अपने साम्राज्य का और विस्तार किया।
- **शक विजय**- पश्चिम में शक क्षत्रप शक्तिशाली साम्राज्य था। ये गुप्त राजाओं को हमेशा परेशान करते थे। शक गुजरात के काठियावाड़ तथा पश्चिमी मालवा पर राज करते थे। 389 ई. 412 ई. के मध्य चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शकों पर आक्रमण कर विजित किया।
- **वाहीक विजय** - महाशैली स्तम्भ लेख के अनुसार चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सिन्धु के पाँच मुखों को पार कर वाहिकों पर विजय प्राप्त की थी। वाहिकों का

पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया। इसके पश्चात् बंगाल, मुम्बई तथा मद्रास से समाचार पत्रो की श्रृंखला आरंभ हो गई। कुछ मुख्य समाचार पत्र थे- कलकत्ता क्रोनिकल (1786) मद्रास कुरियर (1788) तथा बाम्बे हेराल्ड (1789)।

ब्रिटिश के आरंभिक समाचार पत्र भारत में रह रहे यूरोपीय तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए प्रकाशित होने थे। हालांकि कंपनी के अधिकारी अपने द्वारा किए जा रहे दुष्कृत्यों के समाचारों से चिंतित थे, अतः तमाम तरह के प्रतिबंध लागू किये गए। लॉर्ड वेलेस्ली (1796-1804) ने 1799 में सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट के जरिए कड़े प्रतिबंध लगाए। इस अधिनियम में चेतावनी दी गई। कि सभी सूचनाएं सरकार के सचिव द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए। प्रकाशक, संपादक तथा मालिक का नाम हर अंक में उल्लिखित होना चाहिए। लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-23) ने 1818 ई. में इनमें से कुछ नियमों में ढील दी तथा प्रेस से प्री-सेंसरशिप हटा ली। हालांकि, यह ढील अस्थायी ही सिद्ध हुई क्योंकि 1823 में कार्यवाहक गवर्नर जनरल का पद संभालने वाले जॉन एडम्स ने इसी वर्ष कुछ और कड़े नियम प्रेस पर थोप दिये। किसी प्रेस का संचालन करने एवं प्रयोग करने के लिए लाइसेंस का होना आवश्यक कर दिया गया। गवर्नर जनरल के पास लाइसेंस निरस्त करने का अधिकार था।

बाद के गवर्नर जनरल चार्ल्स मेटेकैफे (1835-1836) स्वतंत्र प्रेस के पक्षधर थे। उन्होंने 1823 के नियमों को निरस्त कर दिया गया। मेटकैफे प्रेस अधिनियम चाहता था कि प्रकाशक केवल अपने नाम तथा प्रकाशन के स्थान एवं परिसर की घोषणा कर दे। इस उदारवादी कदम ने प्रेस की प्रगति पर सकारात्मक प्रभाव डाला तथा 1857 तक जब तक कि विद्रोह के चलते पुनः कड़े नियम नहीं लगाये गए बड़ी संख्या मे समाचार पत्र प्रकाशित हुए। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र पर सबसे कठोर प्रतिबंध लॉर्ड लिटन का वर्नाकुलर प्रेस एक्ट 1878 का था। एक अत्यन्त ही रंगभेदी तथा भेदभाव वाले इस अधिनियम ने सरकार के खिलाफ भारतीय भाषाओं की अभिव्यक्ति का गला घोंटने का प्रयास किया। ये प्रतिबंध ब्रिटिश समाचार पत्रों पर लागू नहीं हुए। यह लिटन की रूढ़िवादी तथा घमंडी सोच का परिचायक था। इसने सरकार को अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय बुद्धिजीवियों की लेखनी पर नियंत्रण का अधिकार दे दिया। जिलाधिकारी के विरुद्ध अपील करने का प्रावधान नहीं था। इस अधिनियम को सन् 1882 में लॉर्ड रिपन द्वारा बदल दिया गया जो अपने उदारवादी दृष्टिकोण की वजह से भारतीय जनता में बहुत लोकप्रिय था।

❖ <u>भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन</u>

राष्ट्रवाद कांग्रेस की विभिन्न विचार धाराएँ विभाजन के उदय के स्थापना व स्वतंत्रता कारण

उदारवादी उग्रवादी क्रांतिकारी गाँधीवादी समाजवादी

<u>राष्ट्रीय आंदोलन के उदय के कारण</u> :

(1) ब्रिटिश राजनीतिक आर्थिक सामाजिक नीतियाँ

- ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों ने विभिन्न राज्यों को जीतकर उनकी अलग -अलग पहचान समाप्त कर वहाँ एक समान सामाजिक -राजनीतिक संरचना स्थापित की।
- इसी क्रम में भारत का एक गवर्नर जनरल नियुक्त किया गया तो साथ ही, एक समान न्यायिक प्रणाली लागू की गई। इस तरह विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले भारतीय एक सूत्र में बधे।
- वस्तुतः ब्रिटिश आर्थिक नीतियों ने भारत के विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एक दूसरे से जोड़ दिया । दरअसल एक साझे एकजुट की उपस्थिति एवं पहचान ने विभिन्न क्षेत्र के भारतीयों को ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ । ब्रिटिश के विरुद्ध एकजुट कर दिया। फलतः राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ।
- **ब्रिटिश शासन द्वारा विकसित संचार प्रणाली जैसे-रेलवे सड़क डाकतार व्यवस्थाने विभिन्न क्षेत्र के लोगों के आवागमन को आसान बनाकर आपसी संपर्क को बढ़ावा दिया ।**
- **फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का आधार निर्मित हुआ। वस्तुतः रेलवे जैसे साधनों के विकास से देश** के विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों एवं लोगों का आपसी संपर्क आसान हुआ । इससे राजनीतिक विचारों के आदान प्रदान की प्रक्रिया को बढ़ावा मिला।
- ब्रिटिश शिक्षा नीति एवं पश्चिमी चिंतन ने भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार किया । फलत :एक भारतीय मध्यवर्ग का उदय हुआ जो

ब्रिटिशऔपनिवेशिक नीतियों के स्वरूप को समझ सका और शोषण के विरुद्ध लोगों को जागरूक कर एककिया एवं मध्यवर्ग होकर बेंथम मिल, रूसो, जॉन लॉक, मोटेस्क्यू डार्विन के विचारों से परिचित हुआ और जनतांत्रिक अधिकारों की मांग करने लगा।

- इस तरह आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यवर्ग ने ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की समीक्षा करके उसके औपनिवेशिक स्वरूप को उजागर कर दिया और शोषण से मुक्ति के लिए विभिन्न संगठनों की स्थापना कर उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया । इसी संदर्भ में यह कहा गया कि "भारतीयों ने पश्चिमी हथौड़े से पश्चिमी बेडियों को तोड़ डाला"।

(2) <u>सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन</u> :-

- 19 वीं सदी के सामाजिक-धार्मिक सुधार ने वर्ण व्यवस्था, जाति-पाँति, छुआछुत और धार्मिक आडंबरों पर चोट कर मानव की एकता पर बल दिया तो साथ ही, प्राचीन गौरवपूर्ण परम्परा को उद्घटित कर भारतीयों के अंदर हीनता की भावना को दूर कर आत्मविश्वास और सम्मान की भावना भरी।
- इसी तरह, सुधारकों ने 'स्वराज' एवं 'स्वदेशी' पर बल दिया और विदेशी शासन को किसी भी दृष्टि से सुखदायी नहीं बताया तथा इससे मुक्त होने के लिए लोगों को प्रेरित किया। इसी क्रम में, भारत भारतीयों के लिए नारा दिया गया। फलतः राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(3) <u>पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन</u> :-

- पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशन से विभिन्न क्षेत्र के बुद्धिजीवियों को उनके विचारों और समस्याओं से अवगत कराया। साथ ही, आधुनिक विचारों जैसे - स्वशासन, लोकतंत्र नागरिक अधिकार आदि को प्रचारित कर लोगों को जागरूक बनाया। इसी क्रम में, राष्ट्रीय चेतना के विकास को बढ़ावा मिला।

(4) <u>लिटन और कर्जन की नीतियाँ</u> :-

- लिटन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीयों को असंतुष्ट किया । लिटन ने देशी समाचार पत्र अधिनियम लाकर समाचार पत्रों की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया । साथ ही, सिविल सेवा परीक्षा में उम्र सीमा में कमी कर भारतीयोंको इससे बाहर करने की योजना बनायी।
- इतना ही नहीं, अकाल के दौरान दिल्ली दरबार का आयोजन कर ब्रिटेन के शासक का सम्मान करने का कार्य किया और भारतीय धन का दुरुपयोग किया और लिख के भारतीय विरोधी नीति से असंतुष्ट होकर लोग एकत्रित हुए।
- **कर्जन ने विश्वविद्यालय अधिनियम लाकर शिक्षण संस्थान की स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया और कलकत्ता नगर निगम अधिनियम लाकर सरकारी हस्तक्षेप को बढ़ाया।** तो साथ ही, बंगाल विभाजन की घोषणा की | इसी क्रम में, बंगाल विभाजन का विरोध बंगाल बाहर भी होने लगा।
- वस्तुतः स्वदेशी आंदोलन शुरू हुआ जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित हुआ । इस तरह ब्रिटिश अधिकारियों की दमनकारी नीतियों से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हुआ। इन्हीं संदर्भों में यह कहा गयो कि 'कुछ बुरे शासक भी अच्छा परिणाम पैदा करते हैं।

(5) <u>रिपन की नीतियाँ</u> :-

- **वायसराय रिपन के समय 1883 में 'इल्बर्ट बिल विवाद सामने आया ।** जिसने भारतीयों को एकजुट होने के लिए प्रेरित किया । वस्तुतः **इल्बर्ट बिल के तहत भारतीयों को भी यूरोपियों का मुकदमा सुनने का अधिकार दिया** गया।
- किंतु **अंग्रेजों ने संगठित होकर इस बिल का विरोध किया जिसे खेत विद्रोह के नाम से जाना जाता** है। अतःरिपन को यह बिल वापस लेना पड़ा। इस बिल के विवाद से स्पष्ट हुआ कि ब्रिटिश अभी भी नस्लवादी नीति पर चल रहे है और संगठित होकर विरोध करने से अपनी मांगो को मनवाया जा सकता है।

<u>कांग्रेस की स्थापना से पूर्व की संस्थाएँ</u> : -

(1) सर्वप्रथम 1836 में बंग भाषा प्रकाशक सभा की स्थापना हुई।

(2) 1838 में बंगाल में "लैंड होल्डर्स सोसाइटी" की स्थापना हुई जो जमींदारों की संस्था थी।

(3) 1851 में "ब्रिटिश इंडियन एसो" की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष राधा कांत देव थे जिन्होंने ब्रिटिश संसद को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उच्च वर्ग के अधिकारियों के वेतन में कमी की जाए तथा नमक शुल्क एवं 'जल शुल्क' में कमी की जाए।

(4) 1866 में ईस्ट इंडिया एसो० की स्थापना दादाभाई नैरोजी ने लंदन में की जिसका उद्देश्य भारत के लोगों की समस्याओं और मांगो से ब्रिटिश जनमत को परिचित कराना था। और इंग्लैण्ड में भारतीयों के पक्ष में जन समर्थन हासिल करना था।

(5) 1867 में पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना रानाडे एवं गणेश वासुदेव जोशी ने की।

(6) 1875 में शिशिर कुमार घोष ने कलकत्ता में इंडिया लीग की स्थापना की।

(7) 1876 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस ने इंडियन एसो० की स्थापना की। इस संस्था को कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था कहा जाता हैं ,सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने कहा कि यह संस्था संयुक्त भारत की अवधारणा पर आधारित है।

- इसकी प्रेरणा हमे मेजिनी के इटली के एकीकरण के आदर्शों से मिलती है। इंडियन एसो० की वार्षिक बैठक Dec. 1885 में कलकत्ता हुई जिसमें सुरेन्द्र नाथ बनर्जी शामिल थे। इसी कारण वे Dec .1885 में बॉम्बे में हो रहे कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में शामिल नहीं पाए। इंडियन एसो० के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे :

(a) भारत में जनमत तैयार करना
(b) हिंदू-मुस्लिम जनसंपर्क बढ़ाना।
(c) सिविल सेवा का भारतीयकरण करना

- वस्तुतः इस परीक्षा के लिए उम्र सीमा में वृद्धि करना और भारत में भी परीक्षा आयोजित करना। इसके लिए ब्रिटिश सरकार के समक्ष अपना पक्ष रखने हेतु 'लाल मोहन घोष' को लंदन भेजा है गया ।

(8) 1884 में महास महाजन सभा की स्थापना वीर राघवाचारी, सुब्रमण्यम अय्यर एवं आनंद चारलू ने की।

<u>कांग्रेस की स्थापना</u> :

- कांग्रेस शब्द संयुक्त राज्य अमेरिका से लिया गया है जिसका अर्थ लोगों का समूह है। इसका आरंभिक नाम इंडियन नेशनल यूनियन रखा गया और प्रथम सम्मेलन पुणे में आयोजित करने की घोषणा की गई ।
- किंतु वहां प्लेग फैलने के कारण यह सम्मेलन बाम्बे में हुआ वहां प्लेग और दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इंडियन नेशनल कांग्रेस कर दिया गया।
- कांग्रेस का संस्थापक एक ब्रिटिश सेवानिवृत अधिकारी A.O. ह्युम था। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे। इसमें 72 लोग सदस्य बने।
- **कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैय्यब थे जो 1887 में मद्रास अधिवेशनमें अध्यक्ष बने।**

<u>कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य:</u>
देश के विभिन्न भागों के राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना।

- जाति, धर्म तथा प्रांतीय विभेदों को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना।
- जनप्रिय मांगो को निरूपित कर उन्हें सरकार के सामने रखना।
- राजनीतिक, सामाजिक तथा आर्थिक मुद्दों पर देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना।
- भविष्य के राजनीतिक कार्यक्रमों की रूपरेखा सुश्चित करना।
- भारत के प्रति अन्यायपूर्ण परिस्थितियों को खत्म करके भारत और ब्रिटेन के संबंधों को घनिष्ठ बनाना ।

<u>कांग्रेस की स्थापना के संबंध में विवाद :</u>

(i) <u>सेफ्टी वाल्व सिद्धांत सुरक्षा कपाट सिद्धांत</u>

- **इस सिद्धांत का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने किया।** उन्होंने ह्युम के जीवनी लेखक विलियम वेडरबर्न को आधार बनाकर अपनी अवधारणा 'यंग इंडिया' लेखों में प्रकाशित किया और कहा कि कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के मस्तिष्क की उपज है।
- वस्तुतः भारतीय असंतोष को पहले ही जान लेने के लिए इस संस्था का गठन किया ।दरअसल लाला लाजपत राय ने कांग्रेस की यह आलोचना उसके उदारवादी नेतृत्व पर प्रहार करने के क्रम में की।

(ii) <u>तड़ित चालक सिद्धांत</u>

- **गोपाल कृष्ण गोखले ने इस सिद्धांत के तहत कांग्रेस की स्थापना को स्पष्ट करते हुए कहा कि सरकारी असंतोष से बचने के लिए भारतीय नेताओं ने ह्यूम का प्रयोग किया।**
- वस्तुतः कांग्रेस का संस्थापक यदि इस समय कोई अंग्रेज नहीं होता, तो आरंभ में ही यह संस्था ब्रिटिश दमन का शिकार हो सकती थी। अतः **ब्रिटिश दमन**

थे जबकि उग्रवादी ब्रिटिश से जुड़ी प्रत्येक संस्थाओं के बहिष्कार की बात कर रहे थे। अर्थात् वे स्कूल, अदालत, उपाधियों आदि के बहिष्कार बल दे रहे थे। इसी क्रम में 1907 अधिवेशन में कांग्रेस अध्यक्ष के में चुनाव के सूरत मुद्दे पर मतभेद बढ़ा और कांग्रेस का विभाजन हुआ। वस्तुतः उदारवादी रास बिहारी घोष को अध्यक्ष बनाना चाहते थे जबकि उग्रवादी तिलक या लाला लाजपत राय को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंततः रास बिहारी बोस अध्यक्ष बने और उग्रवादी कांग्रेस से बाहर कर दिए गए।

बंगाल विभाजन का रद्द होना :

- बंगाल में क्रांतिकारी घटनाओं के बढ़ने से चित्रित होकर ब्रिटिश सरकार ने 1911 में बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा की। इससे पूर्वी बंगाल के मुस्लिम समुदाय को आघात पहुँचा।
- अतः उन्हें संतुष्ट करने के लिएसरकार ने भारत की राजधानी कलकत्ता से बदलकर दिल्ली घोषित कीजो पहले मुस्लिम शासन का केन्द्र था। इसी के साथ सरकार ने बिहार एवं उड़ीसा को बंगाल से अलग कर नवीन प्रांत बना दिया।

क्रांतिकारी आंदोलन

- **उदय के कारण**
- **कार्यक्रम**
- **विचारधारा**
- **प्रसार**
- **पतन**
- **देश मे विदेश में**

उदय के कारण :

(i) नरमपंथी राजनीति अव्यवहारिक एवं गरमपंथी (उग्रवादी) राजनीति असफल हो रही थी। ऐसे लोगों का बम और पिस्तौल की राजनीति विश्वास जगा।

(ii) सरकार की दमनात्मक कार्यवाही ने युवक, युवतियों को विद्रोही बनाया और वे 'बल को बल से रोकने' के दर्शन में विश्वास करने लगे।

(iii) विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से क्रांतिकारी गतिविधियों को बढ़ावा मिला । जैसे युगान्तर बंदी जीवन, साध्य में लिखे गए लेख और गीतों से लोगों में व्यक्तिगत वीरता और बलिदान की भावना पैदा होती रही। **बंदी जीवन की रचना शचिन्दनाथ सान्यालय ने की। इस पुस्तक को क्रांतिकारियों की बाइबिल कहा जाता हैं ।**

(iv) आयरलैंड के क्रांतिकारी एवं रूस के शून्यवादी जैसे क्रांतिकारी समूहों से प्रेरित होकर भारत में भी क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ावा मिला।

(v) समाजवादी विचारधारा के विकास ने भी क्रांतिकारी गतिविधियों को प्रेरित किया । वस्तुतः 1917 की रूसी साम्यवादी क्रांति की सफलता से प्रेरित होकर भारत में भी युवा वर्ग उत्साहित हुआ और क्रांति के माध्यम से अपने अधिकार प्राप्ति के लिए आगे बढ़ा।

(vi) गाँधी के असहयोग आंदोलन की अचानक वापसी से युवा वर्ग को निराशा हुई। अब उसे ब्रिटिश शासन के विरोध का कोई विकल्प नजर नहीं आया। अतः एकबार फिर बम और पिस्तौल की राजनीति में लोगों का विश्वास जागा।

कार्यक्रम :

(i) अलोकप्रिय ब्रिटिश अधिकारियों की हत्या करना अर्थात् जिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीयों के प्रति दमनात्मक कार्यवाही की और दुर्व्यहार किया, उनकी हत्या करना।

(ii) बम बनाना एवं विदेशों से हथियार प्राप्त करना।

(ii) गुप्त समीतियों की स्थापना कर सशस्त्र कार्यवाही करना।

(iv) स्वदेशी डकैती डालना।

(v)क्रांतिकारी विचारों के प्रसार हेतु पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशनकरना। जैसे- वीरेन्द्र कुमार चटोपाध्याय ने'तलवार' नामक पत्र का संपादन किया ।

(vi) सैनिक शिक्षा और धार्मिक कार्यक्रम द्वारा लोगों में राष्ट्रवादी भावना पैदा करना और उन्हें क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए तैयार करना ।

क्रांतिकारी विचारधारा :-

19 वीं सदी के क्रांतिकारी केवल विदेशी शासन से मुक्ति चाहते थे। अर्थात् राष्ट्रवादी थे किंतु 10 वीं सदी में 1920 के पश्चात् **क्रांतिकारी समाजवादी विचारधारा से युक्त हो गए जिनमे प्रमुख थे भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद ।** इन क्रांतिकारियों ने स्पष्ट किया कि हमे उस व्यवस्था को समाप्त करना है जिसमें लोगों का शोषण होता है अर्थात् राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ-साथ समाजवादी शासन की स्थापना का लक्ष्म घोषित किया । इसी क्रम में रेलवे जहाज निर्माण इकाईयों जैसे परिवहन के साधन एवं लौह उद्योग जैसी इकाइयों के राष्ट्रीयकरण पर बल दिया।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

क्रांतिकारियों ने कहा कि भारत में संघर्ष तब तक चलता रहेगा जब तक मुट्ठी भर शोषक अपने लाभ के लिए जनता के श्रम का शोषण करते रहेंगे। इस बात का कोई महत्व नहीं कि शोषक अंग्रेज पूँजीपति है या भारतीय अथवा दोनो का गठबंधन। इस तरह क्रांतिकारियों ने यह स्पष्ट किया कि बम और पिस्तौल की राजनीति में उनका विश्वास नहीं है। उनका लक्ष्य तो किसान एवं मजदूरों के शासन की स्थापना करना है

रामप्रसाद बिस्मिल ने अपने हिरासत की अवधि के दौरान कहा कि युवा पिस्तौल का साथ छोड़ दे और जनता के साथ खुला आंदोलन चलाए तथा सभी राजनीतिक दल कांग्रेस के नेतृत्व में एकजुट हो। उन्होंने समाजवाद में आस्था प्रकट करते हुए कहा कि प्रकृति की संपदा पर सबका अधिकार हैं।

भगत सिंह भी अपने चिंतन में समाजवाद के समर्थक थे। उनके अनुसार क्रांति का तात्पर्य जनता द्वारा जनता के लिए परिवर्तन करना था। उन्होंने कहा कि क्रांति के लिए रक्तरंजित संघर्ष आवश्यक नहीं है। व्यक्तिगत दुश्मनी के लिए भी उसमें कोई जगह नहीं है यह बम और पिस्तौल की उपासना नहीं है। क्रांति से हमारा आशय यह है कि अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था समाप्त होनी चाहिए। इस तरह क्रांतिकारियों ने क्रांति को परिभाषित किया।

भगत सिंह धर्मनिरपेक्ष क्रांतिकारी थे। उन्होंने भारत नौजवान सभा की स्थापना की और इसके लिए यह नियम बनाया कि इसके सदस्य ऐसे किसी संगठन या पार्टी से किसी तरह का संबंध नहीं रखेंगे जो सांप्रदायिकता का प्रचार करती हो। वे धर्म को जनता का व्यक्तिगत पहलू बताते थे। उन्होंने जनता को अंधविश्वास एवं धर्म के बंधन से होने पर बल दिया।

- इसी क्रम में, उन्होंने धर्म और उससे जुड़ी हुई अवधारणाओं की आलोचना की और नास्तिकता का मार्ग अपनाया। ईश्वर के अस्तित्व में उनकी आस्था समाप्त हो गयी। इसी क्रम में उन्होंने घोषित किया कि प्रगति के लिए संघर्ष करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अंधविश्वासों की आलोचना करनी ही पड़ेगी।

20 वीं सदी के क्रांतिकारी आंदोलन में महिलाओं की भूमिका भी दिखाई देती है। इसमें 'प्रीतिलता वाडेकर', 'शांति घोष', 'वीणा दास', 'कल्पना दत्ता', 'सुनीता चौधरी' आदि का नाम उल्लेखनीय है।

<u>प्रसार</u> :

(1) देश में :

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की। महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी। वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने (बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर) तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया। जिसमें कहा गया कि 'बल को बल द्वारा' ही रोका जा सकता है।
- भारत में निवास करने वाले 30 करोड़ लोगों को औपनिवेशिक शोषण को समाप्त करने के लिए अपने 60 करोड़ हाथों का उपयोग करना चाहिए।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन (मास्टर दा) ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया ।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रांति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- **दिल्ली में 1912 में वायसराय लॉर्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्त्वपूर्ण थी।**
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस **काकोरी षड्यंत्र मुकदमें के तहत राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी।** चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किंतु वे फरार होने में सफल रहे ।

4. बीसवीं शताब्दी में भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए।

5. महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय आंदोलन को किस प्रकार एक जन आंदोलन बना दिया?

6. भारत के विभाजन के लिए उत्तरदायी कारणों की विवेचना कीजिए।

अध्याय – 5

स्वातंत्र्योत्तर राष्ट्र निर्माण और पुनर्गठन

❖ 1945 -1947 के बीच का भारत :

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा – नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा – 20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना – 3 जून 1947

वैवेल योजना (1945) -वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।

- **इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।**
- ब्रिटिश सरकार इन राजनीतिक सुधारों के लिए इसलिए उत्साहित थी कि 1945 में इंग्लैण्ड में चुनाव होने वाले थे और वहाँ की सरकार यह प्रदर्शित करना चाहती थी कि वह भारत में समस्या समाधान के प्रति गंभीर है।

वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए:

(i) वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।

(ii) वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।

- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों- मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना

ने विरोध किया। अतः वायसराय वेवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।

- कांग्रेस ने जिन्ना के मत को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती।

आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA):-

- ***INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।*** जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था । उन्होंने मोहन सिंह से कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए जापानियों के साथ मिलकर कार्य करें ।
- वस्तुतः मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे और जब ब्रिटिश सेना दक्षिण पूर्व एशिया से पीछे रह रही थी तो मोहन सिंह जापानियों के साथ हो गए। इसी क्रम में 1 सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- ***INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होंने "दिल्ली चलो" का नारा दिया ।*** यहाँ क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने उन्हें सहयोग दिया। अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्तूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया। इसका मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून(म्यांमार) में भी बनाया गया ।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गाँधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया तो ***महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया ।***
- 6 जुलाई 1944 में सुभाष चन्द्र बोस ने एक रेडियो संदेश में कहा कि भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध शुरू हो चुका हमारे राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।
- शहनवाज खान के नेतृत्व में INA की सैन्य टुकड़ी जापानियों के साथ मिलकर भारत - बर्मा सीमा पर हमला करने के लिए इंफाल भेजी गयी किंतु जब जापानियों की विश्व युद्ध में पराजय होने लगी तब उनके साथ-साथ आजाद हिंद फौज के सैनिकों को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा और उन पर मुकदमा चला।

लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945):

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया। फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- नेहरू ने सरकार से इन गुमराह देश भक्तों के प्रति उदारता दिखाने की अपील की। इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे। नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे - कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था। मुकदमे के दौरान जनता ने सक्रिय भूमिका निभायी देश भर में हड़ताल और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। समाचार पत्रों में लेख लिखे गए।
- आजाद हिंद सप्ताह (11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा ***12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।***
- इसी तरह ***अखिल भारतीय महिला सम्मेलन में इन युद्ध बंदियों को रिहा करने की मांग की गयी।*** साथ ही, सरकारी कर्मचारी एवं सेना के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए। वे सरकार विरोधी सभाओं में जाते थे और चंदा भी देते थे।
- मुकदमे के संदर्भ में आंदोलन में भारतीय जनता के राष्ट्रवाद का परिपक्व रूप दिखाई पड़ा। वस्तुतः भारत बनाम इंग्लैण्ड का मुद्दा स्पष्ट हो गया और भारतीय का आंदोलन पूर्णतः आजादी के रंग में रंगने लगा। अतः सरकार ने भी घोषणा की कि उन्हीं कैदियों पर मुकदमा चलेगा जिस पर बर्बरता एवं हत्या का आरोप है।
- आजाद हिंद फौज के कैप्टन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।

शाही भारतीय नौसेना विद्रोह (18 फरवरी 1946) - बाम्बे बंदरगाह पर खड़े हुए नौसैनिक प्रशिक्षण

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम एवं गृहयुद्ध पर आधारित

प्रश्न-6. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम की वैचारिक पृष्ठभूमि की विवेचना करें। (50 शब्द) RAS Mains (2021)

प्रश्न-7. 'नेविगेशन एक्ट क्या है बताइये ? (15शब्द)

प्रश्न-8. बोस्टन टी पार्टी पर संक्षिप्त टिप्पणी का वर्णन कीजिए। 150 शब्द)

प्रश्न-9. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम की प्रकृति पर संक्षिप्त विवेचन कीजिये | (50 शब्द)

प्रश्न-10. प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं। "अमेरिकी क्रांति के संदर्भ में उपर्युक्त कथन का उल्लेख किजिये। (100 शब्द)

अध्याय – 2

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रांति (1789 ईस्वी) व औद्योगिक क्रांति

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम

क्रांति पूर्व अमेरिका की स्थिति

उत्तर में मेनचेस्टर से दक्षिण में जॉर्जिया तक कुल तेरह अंग्रेजी बस्तियाँ थी। इन उपनिवेशों में 1713 ई. में से 1763 ई. के बीच जनसंख्या में चार गुना वृद्धि हुई। इसकी तुलना में क्षेत्रफल में तीन गुना बढ़ोत्तरी हुई जो कि बस्तीवासियों के पश्चिम की ओर अग्रसर होने से हुई। 1713 ई. से 1763 ई. के बीच बड़ी संख्या में अंग्रेज, स्कॉट, जर्मन तथा फ्रेंच आप्रवासी अमेरिका की बस्तियों में जाकर बसे। ये वाणिज्यवाद के महत्त्वपूर्ण वर्ष थे। अमेरिका के सभी उत्पादनों तथा लकड़ी, चमड़ा, तम्बाकू, चीनी, तांबा, मछली आदि की कीमतें इंग्लैण्ड तथा यूरोप में तेजी से बढ़ी जिससे अमेरिकी लोग समृद्ध हुए, यद्यपि इंग्लैण्ड की व्यापारिक नीति लगातार बाधाएँ खड़ी करती रही। 50 वर्षों की लगातार खुशहाली के कारण ही अमेरिकी तत्कालीन विश्व में ऊँचा जीवन स्तर बना पाये। इंग्लैण्ड की यात्रा पर जाना अब एक आम बात बन गई थी। विदेशों से पुस्तकों का आयात बहुत बड़े स्तर पर किया जाने लगा था और कई पत्र-पत्रिकायें अमेरिका में भी छपने लगी थीं। पत्रकारिता से अमेरीकियों का लगाव पैदा हो चुका था। बोस्टन व अनापोलीस जैसे नगरों में इंग्लैण्ड की तुलना में अधिक सुन्दर भवनों का निर्माण किया गया। कई प्रसिद्ध अमेरिकी विश्वविद्यालय जैसे प्रिंस्टन, येल, डार्टमाउथ, ब्राउन इत्यादि क्रांति से पूर्व स्थापित हो चुके थे। क्रांति काल के महत्त्वपूर्ण अमेरिकी नगर-बोस्टन, न्यूयार्क, जेम्स टाउन, चार्ल्स टाउन, सवानाह, फिलोडेलफिया आदि थे। नगरों ने इस क्रांति में प्रमुख भूमिका निभाई।

1) अमेरिकी दृष्टिकोण में परिवर्तन

अमेरिका की क्रांति का एक उल्लेखनीय कारण यहाँ की जनता का परिवर्तित दृष्टिकोण था। लोग नए रूप में सोचने लगे और नए उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करने लगे। यह परिवर्तन निम्नलिखित परिस्थितियों एवं घटनाओं का परिणाम था –

1. **उपनिवेशों में इंग्लैण्ड के प्रति प्रेम का अभाव:-** अधिकांश उपनिवेशों के लक्ष्य में इंग्लैण्ड की सरकार के प्रति द्वेष और प्रतिकार की भावना विद्यमान थी। जो अंग्रेज धार्मिक अत्याचारों से परेशान होकर उपनिवेशों में आकर बस गए थे, उनमें इंग्लैण्ड के चर्च और वहाँ की सरकार के प्रति सहानुभूति और प्रेम का अभाव स्वाभाविक था। इंग्लैण्ड के शासकों ने उनके शोषण की जो नीति अपनाई थी, वह उन्हें क्षुब्ध करने के लिए काफी थी । अंग्रेजों के अलावा अन्य यूरोपीय देशों से जो लोग उपनिवेशों में आकर बस गए थे, उनसे इंग्लैण्ड के प्रति सहानुभूति की आशा नहीं की जा सकती थी। इंग्लैण्ड और अमेरिका में स्थापित उपनिवेशों में निकट संपर्क का विकास नहीं हो पाया था, उनके आपसी संबंध बहुत ही कच्चे थे और इंग्लैण्ड के विरुद्ध विरोधी भाव ही अधिक पक्के थे।
2. **विरोधी उद्देश्य:-** ब्रिटिश सरकार और अमेरिकी जनता के उद्देश्य विरोधी थे। सरकार के मतानुसार ब्रिटिश संसद का सभी अमेरिकी उपनिवेशों पर पूरा नियंत्रण रहना चाहिए था। अमेरिकी जनता के अनुसार उपनिवेशों का प्रशासन उनका घरेलू मामला था अतः स्वायत्तता मिलनी चाहिए थी। इस विरोध ने अमेरीकियों को विद्रोही बना दिया।
3. **स्वातन्त्रय प्रेम और प्रगति की आकांक्षा:-** उपनिवेशों के निवासी उत्साही और स्वतंत्रता प्रिय थे। उनमें लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति और स्वतंत्रता का इंग्लैण्ड के लोगों से भी अधिक प्रचार था। अतः स्वाभाविक था कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति के विरुद्ध प्रतिक्रिया की शुरुआत हुई और क्रमशः अमेरिकी भूमि पर स्वतंत्रता के फूल खिले यहाँ के लोग अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए और ब्रिटेन के शोषण तथा कुलीनतंत्री विशेषाधिकारों के विरोधी बन गए। अमेरिका में जो लोग उद्यमी और महत्वाकांक्षी थे, वे उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रशासन और कानूनों द्वारा उनके मार्ग को अवरूद्ध किया, फलतः वे उनके विरोधी बन गए और क्रांति में शामिल हो गए।
4. **दमनकारी व्यापारिक कानून और कर वृद्धि:-** ग्रेट ब्रिटेन में वणिकवादियों का प्रभाव था। उनकी प्रेरणा से ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी व्यापारिक कानून बनाए। इससे अमेरिकी जनता के आत्म-सम्मान को ठेस लगी। ब्रिटिश इतिहासकार लेकी के अनुसार इन कानूनों ने अमेरिकी दृष्टिकोण को विद्रोही बना दिया। ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी व्यवसाय और जहाजरानी को प्रभावित करने वाले अनेक कानून बनाए। इन कानूनों से दक्षिण की अपेक्षा उत्तरी उपनिवेशों को अधिक हानि पहुँची क्योंकि उनके पास ऐसे मूल्यवान पदार्थ नहीं थे जिन्हें इंग्लैण्ड भेजकर वे बदले में तैयार माल प्राप्त कर लेते। ब्रिटेन से उपनिवेशों को जाने वाले माल पर निर्यात कर 2/5 प्रतिशत बढ़ाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया। ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशियों पर जब नए-नए कर लगाना शुरु कर दिए तो उनमें विद्रोह की भावना भड़क उठी।
5. **नई संस्थाओं का जन्म:-** 1600 में अमेरिका में विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संस्थाओं का गठन हुआ जो अपूर्व तथा अद्वितीय थी । इन्होंने अमेरिका को एक नया जीवन-दर्शन दिया यहाँ आत्म विश्वास जाग्रत हुआ और अमेरिकी जनता अपने को ब्रिटेन से हीन अथवा अधीनस्थ मानने को तैयार नहीं हुई।
6. **प्रगति की आकांक्षाएँ:-** अमेरिका में जो लोग उद्यमी और महत्वकांक्षी थे, वे उन्नति के शिखर पर पहुँचना चाहते थे। ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रशासन और कानूनों द्वारा उनके मार्ग को अवरुद्ध किया। फलतः वे उनके विरोधी बन गए और क्रांति में शामिल हो गए।

2) आर्थिक कारण

अमेरिका में आर्थिक दृष्टि से विभिन्न वर्ग (व्यापारी, बागान मालिक, दलाल, सट्टेबाज आदि) बन चुके थे। इनके हितों को ब्रिटिश शासन ने विभिन्न प्रकार से हानि पहुँचायी अतः वे क्रांति के समर्थक बन गए। क्रांति के आर्थिक कारणों में उल्लेखनीय कानून और नीतियाँ इस प्रकार हैं-

(1) **व्यावसायिक और जहाजरानी कानून:-** ब्रिटिश संसद ने अमेरिकी व्यवसाय और जहाजरानी को प्रभावित करने वाले अनेक कानून बनाए। इन्होंने दक्षिण की अपेक्षा उत्तरी उपनिवेशों को अधिक हानि पहुँचाई क्योंकि उनके पास मूल्यवान पदार्थ नहीं थे, जिन्हें इंग्लैण्ड ले जाते और बदले में तैयार माल लाते इंग्लैण्ड से आने वाले माल का भुगतान नकद करना पड़ता था। उत्तर के उपनिवेश (न्यू-इंग्लैण्ड) निर्यात का माल वेस्टइण्डीज से माँगते थे और उसे गेहूँ, माँस तथा कच्चा माल भेजते थे। वे गुड़ भी

मंगवाते थे जिससे शराब बनाकर अफ्रीका के गुलामों को बेची जाती थी। ब्रिटिश संसद ने 1733 में गुड़ कानून बनाया। इसके अनुसार वेस्टइण्डीज के साथ न्यू-इंग्लैण्ड के गुड़-व्यापार को नियंत्रित कर दिया गया। यदि इस कानून को कठोरता से लागू किया जाता तो न्यू-इंग्लैण्ड को भारी हानि उठानी पड़ती। इस कानून की व्यापक अवहेलना की गई। तस्कर व्यापार करना कोई अपवाद नहीं रह गया। अंग्रेज अधिकारियों ने इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। कुछ ने यह कहकर समर्थन भी किया कि अन्त में यह रकम इंग्लैण्ड के व्यापारियों के पास ही जाती है।

(2) <u>निर्यात कर में वृद्धि</u>:- ग्रेट ब्रिटेन से उपनिवेशों को जाने वाले माल पर निर्यात कर 2.5% से बढ़ाकर 5% कर दिया गया। चुँगी अधिकारियों को अधिक शक्ति से काम करने के आदेश दिए गए। इन अधिकारियों की संख्या बढ़ाई गई।

(3) <u>दक्षिण की आर्थिक नीति</u>:- दक्षिण की स्थिति पर्याप्त भिन्न थी। उसका व्यापार वेस्ट-इण्डीज के साथ नगण्य था। वह अपनी तम्बाकू, नील, जहाजों का सामान, खाल आदि इंग्लैण्ड भेजता था और वहाँ से बदले में तैयार माल मंगाता था। यह व्यापार दूसरे उपनिवेशों के लिए हानिकारक और इंग्लैण्ड के लिए लाभप्रद था। यह जिन ब्रिटिश व्यापारियों और एजेन्टों के हाथ में था, वे उपनिवेशों से कच्चा-माल कम कीमत पर खरीदते थे और निर्मित माल अधिक कीमत पर बेचते थे। बागान-मालिक लंदन से मनमाना आयात करते थे और उसका भुगतान हुण्डियों द्वारा करते थे। वे ऋण चुकाने में बर्बाद हो जाते थे। क्रांति के आरम्भ में वर्जीनिया पर ब्रिटिश व्यापारियों का कर्ज अनुमानतः 20 लाख पौण्ड था। ये कर्जदार अपने अंग्रेज साहूकारों से घृणा करते थे। 1750 के बाद दक्षिणी उपनिवेशों के कुछ विधानमंडलों ने कर्जदारों के पक्ष में दिवालिया नियम तथा स्थान कानून बनाए जो कर्जदारों के पक्ष में थे। इंग्लैण्ड की प्रिवी कांउसिल ने विशेषाधिकार द्वारा उन्हें अस्वीकार कर दिया। इससे उपनिवेशों में अपमानजनक भावना फैल गई और वहाँ के निवासी यह समझने लगे कि इंग्लैण्ड के धनी लोग निर्धनों को सता रहे हैं। उपनिवेशों में कागजी मुद्रा का प्रचलन हो चुका था किन्तु इंग्लैण्ड की संसद इसका लगातार विरोध कर रही थी।

(4) <u>भूमि पट्टा संबंधी नीति</u>:- उपनिवेशों में धन-उत्पादन के दो प्रमुख तरीके थे –

(क) आदिवासियों के साथ 'फर' चमड़े का व्यापार

(ख) जंगल के बड़े क्षेत्रों को प्राप्त करने, विभाजित करने और बेचने के लिए कम्पनियों की स्थापना कर के व्यापारी और भूमि के सट्टेबाज अपने कार्य में पूरी स्वतंत्रता चाहते थे। पेन्सिलवेनियाँ, वर्जीनिया और केरोलीना के मैदानों के निवासी जमीनें प्राप्त करने के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। ब्रिटिश सरकार न इस संबंध में कठोर नीति का पालन किया। 1763 में उसने घोषणा की कि अल्पेशियन पहाड़ की चोंटी तक की सभी बस्तियाँ समाप्त कर दी जाये। इस सीमा से बाहर की जमीन को शाही-क्षेत्र बनाकर अस्थाई तौर पर निषिद्ध कर दिया गया। सम्राट की स्वीकृति के बिना इसे बेचा नहीं जा सकता था। यह घोषणा इसलिए की गई ताकि कुछ समय में यहाँ के मूल निवासी चले जाएँ और बाद में जमीनों को औपनिवेशिक बस्तियों के लिए खोल दिए जाए।

3) **<u>धार्मिक कारण</u>:-** अमेरिकी जनता में कई कारणों से धार्मिक असंतोष पैदा हुआ। इस समय विभिन्न उपनिवेशों के चर्चों को ब्रिटिश राज्य का समर्थन प्राप्त था और राज्य विरोधी होने के कारण जनता इन चर्चों की भी आलोचना करने लगी। यह आलोचना मुख्यतः ऐंग्लिकन चर्च के विरुद्ध की गई। इस चर्च के कठोर अनुशासन ने अमेरीकियों में विद्रोह की भावना भर दी।

जनता का धार्मिक विरोध मूलतः दो प्रकार का था

(1) वह धर्मिक कर नहीं देना चाहती थी क्योंकि इसके आधार पर पादरी लोग निवासी एवं भ्रष्ट बन गए थे। दक्षिणी राज्यों में इन पादरियों की अतुल सम्पत्ति और सम्मान था।

(2) चर्च तथा धार्मिक सम्प्रदाय के अनेक लोग राजनीति में सक्रिय हो गए थे। अमेरिकी जनता उनसे भयभीत तथा आशंकि हो गई और उनके कार्यों का विरोध करने लगी।

<u>दोषपूर्ण शासन व्यवस्था</u>

उपनिवेशों की शासन व्यवस्था के तीन प्रमुख अंग थे-

1 गवर्नर,

2 गवर्नर की कार्यकारिणी समिति

3 विधायक सदन अथवा असेम्बली।

गवर्नर और उसकी कार्यकारिणी समिति तो सम्राट

फ्रांस ने सम्पूर्ण कोचीन - चीन पर अपने शासन का विस्तार कर लिया।

9) फ्रांसीसियों को कोचीन-चीन (दक्षिणी वियतनाम) पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में आठ वर्ष लगे और टोकिंग (उत्तरी वियतनाम) को अधिकार में लाने के लिए आगामी सोलह वर्ष तक प्रयास करना पड़ा। इसी अवधि में अनाम (मध्य वियतनाम) पर भी उनका अधिकार हो गया। इस प्रकार, समूचे वियतनाम उनके अधिकार में आ गया।

अफ्रीका में साम्राज्यवाद-

अफ्रीका का बँटवारा

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अफ्रीका का बंटवारा विश्व की एक महान घटना है। 1871 ई. से पूर्व अफ्रीका का थोड़ा सा भाग ही यूरोप के देशों के अधीनस्थ हुआ था। दक्षिण में ब्रिटेन व डच ने ओरेंज तथा वाल नदियों के भू-भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। 1843 में इंग्लैण्ड ने केप कालोनी (Cape) तथा नेटाल पर अपना अधिकार कर लिया था। अफ्रीका के पश्चिमी तट पर स्थित सेनेगल (Senegal), आइवरी कोस्ट (Ivory Cost) व गेबून पर फ्रांस का अधिकार हो गया था। इस महाद्वीप के पूर्वी व पश्चिमी भाग के कुछ प्रदेशों पर पुर्तगाल, फ्रांस व ग्रेट ब्रिटेन ने अपना-अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था। ट्यूनिस (Tunis) तथा ट्रिपोली (Tripoli) पर तुर्की (Turkey) का आधिपत्य था, मिस्त्र, इंग्लैण्ड व फ्रांस को कर अवश्य देता था पर वह आंतरिक मामलों में पूर्व स्वतंत्र था। इस महाद्वीप का वास्तविक बंटवारा 1876 ई. में आरंभ हुआ।

लियोपोल्ड द्वितीय व अफ्रीका का बँटवारा - लियोपोल्ड बेल्जियम का शासक था। उसने 1876 ई. में ब्रूसेल्स (Brussels) में भूगोलवेत्ताओं का एक गैर सरकारी सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में सम्राट ने अफ्रीका के प्रदेशों की खोज करने तथा उसके असभ्य निवासियों को सभ्य बनाने के सुझाव आमंत्रित किये। स्टेनली के सहयोग से लियोपोल्ड ने कांगों फ्री स्टेट की स्थापना की और स्वयं उसका शासक बन गया। इस दिशा में स्टेलनी ने 1875-76 में कांगों नदी घाटी की खोज । वह खोज बड़ी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई। इस खोज ने उसके प्राकृतिक साधनों की ओर अपने देशवासियों का ध्यान आकर्षित किया। इंग्लैण्ड उस समय पूर्वी समस्या में उलझा हुआ था। इस कारण बेल्जियम को इधर पांव पसारने का अवसर मिल गया। बेल्जियम के शासक के इस कार्य ने यूरोप के अन्य देशों का भी ध्यान अफ्रीका की ओर आकर्षित कर दिया। सब वहां पर अपने - अपने उपनिवेशों की स्थापना के प्रयास करने लगे।

कांगो (साम्राज्यवाद का एक क्रूर उदाहरण)

अफ्रीका महाद्वीप को वहां के प्राकृतिक वातावरण के आधार पर पांच भागों में विभक्त कर सकते हैं। उत्तरी अफ्रीका-इसके अधिकांश देश भू-मध्य सागर के तट पर स्थित थे। इस कारण वे यूरोप के साम्राज्यवादी देशों की दृष्टि में आ चुके थे। इसका दूसरा प्राकृतिक भाग है-मध्य अफ्रीका। इस भाग में इस महाद्वीप का सहारा रेगिस्तान पश्चिम से पूर्व की ओर विस्तृत है। लीबिया व सूडान का दक्षिणी भाग भी इसी रेगिस्तान में आते हैं। रेगिस्तान भाग विस्तृत एवं भयानक है। इस रेगिस्तान के कारण ही अफ्रीका के मध्यवर्ती भाग के विषय में विश्ववासियों को 19 वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक कोई जानकारी नहीं थी। परन्तु इंग्लैंड निवासी डेविड लिविंगस्टन (David Livingstone) ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में इस सहारा रेगिस्तान को पार करने की हिम्मत की वह बीस वर्ष तक इस दुर्दम्य रेगिस्तान के भागों की खोज कार्य से जेम्बिसी एवं कांगो नदी के क्षेत्र भी नहीं बच सके। वह एक उत्साही धर्म प्रचारक था, उसके इस खोज कार्य के उपरान्त अन्य यूरोपीय उत्साही खोजकर्त्ताओं (बार्थ, बेगल, नाक्टिगाल) ने सूडान के रेगिस्तानी भागों की खोज की। इनके उपरान्त हेनरी मार्टन स्टेनली मध्य अफ्रीका में गया और उसने 1875-76 में कांगो नदी की घाटी तथा उसकी सहायक नदियों के क्षेत्र का अन्वेषण किया अपनी कठिन यात्रा के उपरान्त उसने एक पुस्तक 'थ्रू दि डार्क कान्टीनेन्ट' (Through the Dark Continent) लिखी। इस पुस्तक के प्रकाशन के उपरान्त मध्यवर्ती अफ्रीका का पता चला। इसका तीसरा भाग है पश्चिमी अफ्रीका चौथा भाग पूर्वी अफ्रीका तथा पांचवा भाग दक्षिणी अफ्रीका है। 1875 तक इस महाद्वीप का कुल 1/10 भाग ही यूरोप के साम्राज्यवादी देश अपने अधीनस्थ कर सके थे। पर 1875 के उपरान्त यूरोप के साम्राज्यवादी देश इस पर ऐसे झपटे कि 1910 तक तो इसका बँटवारा पूर्ण हो गया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

whatsa pp- 1 https://wa.link/9qwi7z web.- https://bit.ly/41wfqPD

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/9qwi7z

Online order - https://bit.ly/41wfqPD

Call करें - 9887809083